इस्लाम की नजरमें सबसे बडा पाप क्या है?

अल्लाह के अलावा किसी और की उपासना करना या अल्लाह के साथ किस और को (उसकी सत्ता में) साझी ठहराना या उसके बराबर समझना, इस्लाम की नज़र में सबसे बड़ा पाप है। इसमें यह बात भी शामिल है कि इनसान किसी और अस्तित्व या वस्तुओं (जैसे प्रतिमा)में अल्लाह की ख़ूबियों को पाए, जैसे कि यह कहना कि ख़ुदा का एक बेटा है या माँ है या कोई और, या फिर वह ख़ुदा में विश्वास ही न रखे आदि।

महिलाओं के बारे में इस्लाम का विचार?

''अल्लाह, मर्द-औरत दोनों को पैदा करनेवाले, ने स्वाभाविक अन्तर को सामने रखते हुए दोनों को अलग-अलग काम और ज़िम्मेदारियाँ सौंपी हैं।''

इस्लाम में, मर्दों और औरतों का मक़ाम अल्लाह के नज़दीक बराबर है। दोनों को ही अपने-अपने कर्मो के प्रति जवाबदेही करनी हैऔर दोनों को ही इसका बराबर प्रतिफल मिलना है। अल्लाह, स्त्री - पुरुष दोनों को पैदा करनेवाले ने, स्वाभाविक अन्तर को सामने रखते हुए दोनों को अलग-अलग काम और ज़िम्मेदारियाँ सौंपी हैं। इस्लाम में औरतों को सबसे अधिक सम्मान और गरिमा की नज़र से देखा गया है। और किसी भी तरह के ज़ुल्म को नापसन्द किया गया है।

क्या इस्लाम में इनसान के जन्मतःपापि होने कि धारणा है?

इस्लाम में इनसान के पैदाइशी गुनहगार होने की धारणा नहीं पाई जाती है। अल्लाह इनसाफ़ करनेवाला है, इसलिए कोई भी व्यक्ति किसी ऐसे कर्म के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जाएगा जो उसने न किया हो।

'जिहाद'क्या है?

किसी व्यक्ति का दीन के लिए इस तरह संघर्ष करना कि जिससे अल्लाह ख़ुश हो 'जिहाद' कहलाता है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है'संघर्ष' जिसमें अच्छे कामों को करने की कोशिश करना, दान दोना या 'इस्लामी' सैनिक कार्यवाही में शामिल होना आता है। इसका सबसे प्रचुलित रूप जंगी जिहाद है जिसका हुक्म समाज में शान्ति की स्थापना करने, जुल्म को बढ़ने से रोकने और इनसाफ़ को बढ़ावा देने के लिए दिया गया है।

क्या इस्लाम आतंकवाद को बढ़ावा देता है?

युद्ध में किसी निर्दोष नागरिक को निशाना बनाना बहुत ही घिनौना और घटिया काम है, जिसको इस्लाम पूर्णतया मना करता है। मासूम इनसानों की तो बात बहुत दूर है, इस्लाम तो मुसलमानों को अनावश्यक रूप से जानवरों और पेड़-पौधों को नष्ट करने की भी इजाज़त नहीं देता। यह तो इस्लाम में बताए गए युद्ध सम्बन्धी नैतिक सिद्धान्तों की मिसाल है। इसके बावजूद यह समझना बहुत ज़रुरी है कि आतंकवाद और किसी नाजायज़ क़ब्ज़े या अपने आधिकारों के लिए जायज़ तरीक़ों से विरोध प्रदर्शन करने में क्या फ़र्क़ है क्योंकि ये दोनों ही अलग-अलग बातें हैं।

क्या सब धर्म समान हैं?

यूँ तो अधिकतर धर्मों में अच्छे व्यवहार और दया एवं उदारता से सम्बन्धित शिक्षाएँ एक जैसी ही हैं, लेकिन इससे भी आगे बढ़कर इस्लाम अल्लाह की महानता पर ज़ोर देता है और उसके एक और सम्पूर्ण होने में वह कोई समझौता नहीं करता है। **दूसरे धर्मों के विपरीत, इस्लाम का पहला सबक़ यह है कि ख़ुदा अपनी पैदा की हुई चीजों से बिल्कुल अलग और बेमिसाल है और तमाम तारिफ़ें और उपासना केवल उसी के लिए हैं। इस्लाम बहुत ही आसान, स्पस्ट और सम्पूर्ण रूप से समझ में आनेवाला धर्म है। इसकी शिक्षाएँ पूर्ण रुप से सुरक्षित हैं'। ख़ुदा के किसी भी पैग़म्बर का इनकार नहीं करता बल्कि कहता है कि वे सब एक ही सन्देश लेकर आए थे।**

हलाल खाना क्या होता है?

'हलाल' या 'जायज़' खाने वे होते हैं जिन्हें खाने की इजाज़त अल्लाह ने मुसलमानों को दी है। सामान्यतः अधिकतर खाने-पीने की चीजों, सिवाय सुअर व शराब आदि के, हलाल है। जानवरों को सही और दयालुतापूर्ण तरीक़े से ज़िब्ह करना चाहिए। इस्लाम की शिक्षा है कि जानवर को ज़िब्ह करने से पहले अल्लाह का नाम लिया जाए और उनको कम से कम तकलीफ़ दीजाए।

मुसलमान कौन बन सकता है?

मुसलमान बनने का मतलब है, अपने सृष्टा की श्रेष्ठता और बड़ाई को स्वीकार करना और फ़रमाँबरदारी करके उसके साथ क़रीबी सम्बन्ध स्थापित करना। इसी से, इस ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी, इनसान को ख़ुशी और सफ़लता हासिल हो सकता है।

अल्लाह ने इस्लाम का दरवाज़ा तमाम इनसानों के लिए खोल दिया है, बग़ैर यह देखे कि कोई व्यक्ति अब क्या है या पहले क्या था।

इसलिए, कोई भी व्यक्ति किसी भी वक़्त इस कलिमे को मानकर और इसका ऐलान करके मुसलमान बन सकता है।

''मुसलमान बनने पर एक इनसान को मक़सद से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करना होता है, जिस पर उसे परलोक में हमेशा रहनेवाली जन्नत की गारंटी दी गई है।''

'मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना के लायक़ नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल.) अल्लाह के पैग़म्बर हैं।''

हमसे सम्पर्क करें

IIC

इस्लामिक इनफ़ॉरमेशन सेंटर

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम के बारे में अधिकतर किये जानेवाले प्रश्न

सत्य का निरावरण

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000

040 - 6832 7832

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम क्या है और मुस्लिम कौन हैं?

इस्लाम एक स्वाभाविक एवं सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था है, जो इनसानों को इस बात की तरफ़ उभारता है कि वे अपने मालिक और उसकी रचना के साथ अपने सम्बन्ध को यथोचित बनाए रखें। यह बताता है कि आत्मा को वास्तविक शान्ति और प्रसन्नता उस समय मिलती है जब इनसान ईश्वर के बताए हुए अच्छे काम करता है और जिनसे समाज और व्यक्ति दोनों को फ़ायदा पहुँचता है।

इस्लाम का पैग़ाम बहुत सादा है वह यह है कि :केवल एक सच्चे खुदा पर विश्वास लाना और उसी की उपासना करना और मुहम्मद (सल्ल.) को अल्लाह का आख़िरी पैग़म्बर मानना। इस्लाम शब्द का अर्थ होता है अल्लाह के सामने समर्पण कर देना। और जो लोग इस्लाम का अनुसरण करते हैं, उन्हें 'मुस्लिम' कहा जाता है, चाहे वे किसी भी जाति या समुदाय से हों।

जीवन का उद्देश्य क्या है?

ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा दी ताकि वह उन्हें परीक्षण करें, कौन स्वतंत्र इच्छा से उसके मार्गपर चलता है ?

ख़ुदा ने इनसानों को यूँ ही बेमक़सद इधर -उधर भटकने के लिए पैदा नहीं किया है। बल्कि, हमें एक बड़े मक़सद के लिए पैदा किया गया है, और वह है एक अल्लाह पर ईमान लाना और उसी की उपासना करना, ताकि हम अपने बनानेवाले के बताए हुए रास्ते के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सकें। यह मार्गदर्शन हमें इस लायक़ बनाता है कि हम एक सफल व सुखी जीवन व्यतीत कर सकें और नरक से बचकर स्वर्ग में दाख़िल हो जाएँ। किसी व्यक्ति के ईमान का इम्तिहान इसमें है कि वह अल्लाह के संकेत और निशानियों को जानने व समझने में अपनी बुद्धि और विवेक का कितना इस्तेमाल करता है और अल्लाह के बताए हुए रास्ते पर कितना चलता है।

अल्लाह कौन है?

उस एक सच्चे ख़ुदा का व्यक्तिगत नाम 'अल्लाह' है। अल्लाह का न कोई साझीदार है और न कोई उसके बराबर का, न उसके माँ-बाप हैं और न कोई सन्तान। अल्लाह के सभी गुण अपने हैं और सम्पूर्ण हैं। जैसे वह ख़ालिक़ (सृष्टा) है, रहमान (दयावान) है, सर्वशक्तिमान है, मुन्सिफ़ (न्यायशील) है, अल-हकीम (सर्वबुद्धिमान) और अल-अलीम (यानी सर्वज्ञ) है। कोई भी मनुष्य या चीज़ उसके स्वामित्व में और उसके ईश्वरीय गुणों में उसकी साझीदार नहीं है,वह अकेला ही विशेष रूप से पूजा करने योग्य है।

मुहम्मद(स) कौन हैं?

मुहम्मद (सल्ल.) नबियों के चले आ रहे लम्बे क्रम के अंतिम पैग़म्बर हैं,जिन्हें इसलिए भेजा गया था कि वे इनसानों को एक अल्लाह की उपासना की तरफ़ बुलाएँ। आप (सल्ल.) एक आदर्श बाप, पति, गुरु, नेता और जज थे और ईमानदारी, न्याय, दयालुता और बहादुरी का सम्पूर्ण उदाहरण थे। हालाँकि मुसलमान आप (सल्ल.) का बेहद सम्मान करते हैं, लेकिन इसके बावजूद, दुसरे नबियों की तरह मुसलमानों में आपकी पूजा का रिवाज नहीं पाया जाता।

इस्लाम को जानने के साधन क्या हैं?

इस्लाम को जानने का सबसे पहला ज़रिया क़ुरआन है, जिसमें इस्लामी शिक्षाओं के मूल सिद्धान्तों को बयान किया गया है। इस्लाम को जानने का दूसरा साधन सुन्नत है। सुन्नत मुहम्मद-स के हज़ारों प्रवचन और कर्मों का संग्रह है जिनको आप के साथियों ने पहुँचाया है।

चूँकि वे लोग बहुत ही सच्चे थे, इसलिए इससे मुसलमानों को जीवन व्यतीत करने का मार्ग मिलता है। तमाम इस्लामी शिक्षाएँ इन्हीं दो प्रामाणिक स्रोतों पर आधारित हैं।

क़ुरआन क्या है?

क़ुरआन संपूर्ण मानवजाति के लिए अन्तिम ईश्वरीय सन्देश है। यह एक मार्गदर्शन है सत्य और असत्य को जाँचने कि कसौटी है। यह अल्लाह के अपने शब्दों में उसी तरह मौजूद है जिस तरह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) पर जिब्रील फ़रिश्ते के ज़रिए उतरा था इसने पिछली सारी ईश्वरीय किताबों (जैसे तौरात और इंजील) का स्थान ग्रहण कर लिया है। यह बहुत से मुद्दों को खोलकर बयान करता है। जैसे कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? ख़ुदा के बारे में सही धारणा क्या है? ख़ुदा के पसन्दीदा और नापसन्दीदा कर्म क्या है? नबियों के क़िस्से और उनसे हासिल होनेवाले सबक़ क्या है? स्वर्ग - नरक और परलोक के दिन का हिसाब इत्यादि। क़ुरआन के चमत्कारों में एक चमत्कार यह है कि यह किताब जबसे अवतरित हुई है तब से (यानी लगभग 1400 सालों से) अपनी अस्ल शक्ल में सुरक्षित है, और इसमें कोई बदलाव नहीं आया है। इसमें बहुत-से ऐसे वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक तथ्य भी पाए जाते हैं जिनका ज्ञान उस समय के लोगों को बिल्कुल नहीं था और जिनका खोजअभी कुछ ही दिनों की गई थी। इससे भी यह बात सिद्ध होती है कि क़ुरआन ख़ुदा ही की तरफ़ से उतरा है।

इस्लाम के स्तम्भ कौन कौन से हैं?

इस्लाम में जिन पाँच मुख्य विशयों का अभ्यास किया जाता है वे इस्लाम के लिए पाँच स्तूप जैसे है।

पहला स्तम्भः हक़ की गवाही देना - यानी इस बात का ऐलान करना कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना के लायक़ नहीं और मुहम्मद (सल्ल.) अल्लाह के आख़िरी नबी है।

दूसरा स्तम्भः नमाज़- रोज़ाना पाँच वक्त नमाज़ पढ़ना : सुब्ह सवेरे (फ़ज्र) , दोपहर के समय (ज़ोहर), शाम के समय (अस्र), सूर्यास्त होने पर (मग़रिब) और रात्रि में (इशा) की नमाज़ अदा करना।

तीसरा स्तम्भ : ज़कात- यह हर साल दिया जानेवाला अनिवार्य धन-दान है जो ग़रीबों को दिया जाता है। यह कुल संचित धन में से ढाई प्रतिशत उन लोगों को अदा करना होता है जिनके पास उनकी बुनियादी ज़रुरत से अधिक (एक निश्चित मात्रा में) धन संचित होता है।

चौथा स्तम्भः रोज़ा- रमज़ान के पूरे महीने, मुसलमान प्रभात से सूर्यास्त तक अपने आपको खाने-पीने और पति-पत्नी सहवास से रोके रखते हैं। इसके अतिरिक्त वे हर बुरे काम से भी बचे रहने की कोशिश करते हैं।

पाँचवाँ स्तम्भ : हज - अगर किसी मुसलमान के पास हज के सफ़र का ख़र्च उठाने की ताक़त हो तो उसे जीवन में कम से कम एक बार सऊदी अरब के शहर मक्का में हजके लिए जाना अनिवार्य है। इसमें नमाज़, दुआएँ, सदक़ा और सफ़र आदि सब शामिल है। हज विनम्रता से पूर्ण एक आध्यात्मिक अनुभव है जो मुस्लिम क़ौम को एकता के सूत्र में बाँधता है।

मुसलमानों का ईसा मसीह और दूसरे पैग़मबरों के बारेमें क्या विचार है?

अल्लाह ने हज़ारों नबियों को दुनिया में भेजा, और हर क़ौम में कम से कम एक नबी को इसी एक पैग़ाम के साथ भेजा कि लोगो अल्लाह ही की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ। उनमें से कुछ नबियों के नाम इस प्रकार है: आदम, नूह, यूसुफ़, इबराहीम, याक़ूब, इसहाक़, मूसा, ईसा और मुहम्मद (इन सब पर ईश्वर की ओर शान्ति हो)। ईसा मसीह (अलैहि.) अल्लाह के महान पैग़म्बरों में से एक थे। आप चमत्कार तौर पर बग़ैर पिता के पैदा हुए और उसके बाद भी आपने अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ बहुत-से चमत्कार लोगों को दिखाए।

"वही है जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम लोगों को आज़मा कर देखे कि तुममें से कौन बेहतर कर्म करनेवाला है और वह बड़ा ज़बरदस्त और माफ़ करनेवाला है।" (क़ुरआन, 67:2)

बुरेकर्म क्यों होते हैं?

ख़ुदा लोगों को अलग-अलग तरीक़ों से अलग-अलग अन्दाज़में आज़माता रहता है। यह आज़माइश इनसानकी सेहत, परिवार, प्राकृतिक आपदाओं, माल या और किसी भी ज़रिए से हो सकती है। अल्लाह के क़रीब हो जाने और परलोक में हमेशा की **(Eternal)** जन्नत हासिल करने का ज़रिआ यह बताया कि इनसान विपत्ति और तंगहाली में सब्र करे (यानी उम्मीद का दामन न छोड़े) और अल्लाह की प्रदान का शुक्र अदा करे (यानी अल्लाह की नेमतों को अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल करे)। यक़ीनन ज़िन्दगी के दुख-दर्द सामयिक **(Temporary)** हैं जबकी जन्नत हमेशा रहनेवाली है।

मरने के बाद क्या होगा?

मौत इस छोटी सी ज़िन्दगी से गुज़रकर हमेशा की ज़िन्दगी में प्रवेश कर जाने का रास्ता है। हर इनसान को क़ियामत के दिन हिसाब-किताब के लिए फिर से ज़िन्दा किया जाएगा। वह दिन इनसाफ़ का दिन होगा। जिस किसी के भी साथ, इस दुनिया में, कोई जुल्म या ज्यादती हुई होगी, उस दिन अल्लाह, जो कि सब कुछ जाननेवाला और बड़ा ही न्याय करनेवाला है, उनके साथ इनसाफ़ का मामला करेगा और उसकी क्षतिपूर्ती की जाएगी। यदि कोई व्यक्ति अल्लाह की बन्दगी और फ़रमाँबरदारी करते हुए एक अच्छी और सम्मानजनक ज़िन्दगी गुज़ारता है, तो उसे अल्लाह की करुणा से जन्नत में दाख़िल किया जाएगा और अगर इनसान इनकार की राह इख़्तियार करता है तो नरक की आग उसके इन्तिज़ार में है।

"यादि मौत के बाद कोई ज़िन्दगी न हो, जिसमें इनसानों को उनकी अच्छाई को उनकी अच्छाई के बदले इनाम दिया जाए और बुराई के बदले सज़ा, तो फिर यह अल्लाह के इनसाफ़ के ख़िलाफ़ बात होगी जिसके नतीजे में इनसानों की ज़िन्दगी दुश्वार हो जाएगी।"